REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

प्रेमचन्द के साहित्य में वर्णित नारी जीवन

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.

❖ सारांश

प्राचीनकाल में भारतीय समाज में नारी को सम्माननीय स्थान प्राप्त था। कालान्तर में नारी को अनेक सामाजिक अवरोधों की श्रृंखला में जकड़ कर उसके स्वतन्त्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया गया। फलतः नारी जन्म से लेकर मृत्युपरान्त समस्याओं में घिर गयी और उसका जीवन अभिशप्त समझा जाने लगा। आधुनिक काल में नयी शिक्षा के साथ सामाजिक परिवर्तन प्रारम्भ हुए जिसके परिणाम स्वरूप नारी विषयक दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ और उसे मानवी रूप में देखा गया। अनेक समाज सुधारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में नारी विषयक समस्याओं को उठाया और यथा सम्भव उनके निराकरण की सार्थक पहल करने का यत्न किया। उनके साहित्य में विवाह के पूर्व, विवाह के बाद तथा विवाहेतर जीवन में नारी की समस्याओं का यथार्थ अंकन है। प्रेमचन्द के आरम्भिक उपन्यासों 'प्रेमा' व सेवासदन का केन्द्र बिन्दु नारी जीवन की समस्याएँ ही हैं। भारतीय समाज में कन्या का जन्म अभिशाप समझा जाता है 'नैराश्य' कहानी में प्रेमचन्द ने इस यथार्थ का अंकन किया है, तदुपरान्त उसके पालन, पोशण व सुरक्षा की समस्या आती है और फिर दहेज के कारण विवाह भी एक समस्या बन जाता है। वैवाहिक जीवन में नारी अनेक समस्याओं से घिरी रहती है। प्रेमचन्द ने दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बाल विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विवाह–विच्छेद, नारी चरित्र पर सन्देह, नारी शोषण की समस्याओं को उठाया है। इसके अतिरिक्त विधवा जीवन, वेश्याओं का जीवन, पर्दा प्रथा, बहु विवाह, कुरूपता आदि अनेक समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया है तथा इनके समाधान के प्रयत्न भी किये हैं। वे समाज में स्त्री को पुरूष के समान अधिकार प्रदान करने के पक्षधर हैं उनका मानना है कि जब जीवन रूपी गाड़ी के दोनो पहिये बराबर होंगे तभी वह सन्तुलित रूप से विकास के पथ पर अग्रसर हो सकती है।

मुख्य शब्द : समाज, नारी, समस्या, विवाह, साहित्य.

❖ प्रस्तावना :

''समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। (मैकाइवर) इस कथन का आशय यह है कि समाज का निर्माण व्यक्तियों से नहीं होता बल्कि व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्ध जब एक व्यवस्था में बँध जाते हैं, तब इसी व्यवस्था को समाज कहते हैं। नारी और पुरुष दोनों ही समाज के अभिन्न अंग हैं साथ ही अन्योन्याश्रित भी। समाज व्यवस्था का सन्तुलन व संगठन दोनों के पारस्परिक व्यवहार पर निर्भर करता है। नारी और पुरुष का पारस्परिक सहयोग समाज को प्रगति एवं उन्नति की दिशा में अग्रसर करता है, जबकि इन सम्बन्धों में तनाव व संघर्ष से अनेक समस्याओं की उत्पत्ति होती है। प्रेमचन्द्र युगीन भारतीय

समाज में नारी और पुरुष के सम्बन्धों में तनाव की स्थिति चल रही थी, जिसका कारण पुरातन जीवन मूल्य एवं सामाजिक आदर्श थे। नैतिकता एवं आदर्श के नाम पर समय–समय पर भारतीय नारी पर जो अनुज्ञाएँ आरोपित की गयीं, समय बीतने पर वे उसके लिये सामाजिक अवरोध की बेड़ियाँ बन गयीं। इन श्रृंखलाओं में जकड़ी हुई नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा। प्रेमचन्द के साहित्य में नारी–जीवन की समस्याओं को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

❖ विवाह पूर्व की समस्याएँ

भारतीय संस्कृति में नारी का जन्म कन्या के रूप में माना जाता था जो पवित्रतम् एवं देवी रूप में मानी जाती थी। परन्तु कालान्तर में नारी विषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन के साथ नारी को समाज में अभिशाप माना जाने लगा। प्रेमचन्द के कथा साहित्य में इस सत्य का चित्रण मिलता है। समाज का पुरुष वर्ग अपनी स्त्री से इसलिये नाराज रहता है कि वह बालिका को जन्म देती है। 'नैराश्य' कहानी की निरुपमा ऐसी ही अभागिनी स्त्री है। यद्यपि वह सम्पन्न कुलीन कुल की वधू है, परन्तु कन्या जन्म के कारण सदैव पति से उपेक्षित रहती है। कहानी का आरम्भ इस प्रकार है– ''आज आदमी अपनी स्त्री से इसलिये नाराज रहते हैं कि उसके लड़कियाँ क्यों होती हैं, लड़के क्यों नहीं होते.....सीधे मुँह बात नहीं करते, कई दिनों तक घर में ही नहीं आते और आते भी तो इस तरह खिंचे तने रहते कि निरूपमा थर–थर काँपती रहती थी कहीं गरज न उठें। सबसे बड़ी विपत्ति यह थी कि त्रिपाठी जी ने धमकी दी थी अबकी कन्या हुई तो मैं घर छोड़कर निकल जाऊँगा, इस नरक में छड़ भर भी न ठहरूँगा। निरूपमा को यह चिन्ता खाए जाती थी।''! निरूपमा घोर निराशा की दशा में अपनी भाभी को पत्र भेजती है। उसकी भाभी स्वांग रचकर उसे महात्मा के दर्शनार्थ बुला लेती है और बोलती है कि महात्मा का आशीर्वाद निष्फल नहीं किया जा सकता अब वह पुत्रवती होगी। ''जब वह गर्भवती हुई तो सबके दिलों में आशाएँ हिलोरे लेने लगी। सास जो उठते गाली और बैठते व्यंग्य से बात करती थी अब उसे पान की तरह फेंटती.....बेटी तुम रहने दो मैं ही रसोई बना लूँगी, तुम्हारा सिर दुःखने लगेगा।.....लड़कियों की बात और होती है, उन पर किसी बात का असर नहीं होता, लड़के गर्भ में ही मान करने लगते हैं.....घमण्डीलाल वस्त्राभूषणों पर उतारू हो गए। हर महीने एक न एक नई चीजें लाते। निरुपमा का जीवन इतना सुखमय कभी न था। उस समय भी नहीं जब वह नवेली वधू थी।''!

परन्तु पुनः कन्या का जन्म होने पर उसका जीवन चिन्ताग्रस्त हो जाता है। फिर वही अपमान, वही अनादर, वही ताने अन्त में इसी शोक में वह पुत्री को जन्मते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। यह है हमारे समाज में नारी जीवन की आरम्भिक दशा।

प्रेमचन्द युगीन समाज में नैतिकता का दोहरा मानदण्ड प्रचलित था। जिन कार्यों के लिये पुरूषों की कोई आलोचना नहीं करता, उन्ही कारणों से नारी पतिता व कुलटा समझी जाती थी। नारी और पुरूष की इस सामाजिक स्थिति के वैषम्य तथा उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न विविध सामाजिक समस्याओं को प्रेमचन्द्र ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था। नारी जीवन की समस्याएँ प्रेमचन्द के सम्मुख कितनी तीव्रता से विद्यमान थी इसका प्रमाण यह है कि प्रेमचन्द के आरम्भिक उपन्यासों 'प्रेमा', 'सेवासदन' आदि का केन्द्र बिन्दु नारी जीवन और उसकी समस्यायें ही हैं।

प्रेमचन्द के कथा साहित्य में नारी जीवन की समस्यायें ज्वलन्त रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। मध्यवर्गीय भारतीय समाज में कन्या के जन्म को ही अभिशाप समझा जाने लगा। कन्या अपने जन्म के साथ ही पालन पोषण, सुरक्षा और विवाह सम्बन्धी अनेक समस्याओं को लेकर आती है और पारिवारिक चिन्ता का कारण बनती है। ऐसा समाज के नारी विषयक दृष्टिकोण के कारण ही है।

निम्न वर्गीय परिवार में धनाभाव के कारण कन्या का पालन–पोषण एक समस्या का कारण होता है। 'गोदान' में प्रेमचन्द ने इस समस्या का चित्रण किया है।

होरी जैसे साधारण कृषक का जीवन दरिद्रता और विपन्नता में व्यतीत होता है। अतः उसकी पुत्रियों में आभूषण और भोग–विलास की लालसा उत्पन्न होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। निर्धनता के कारण सोना और रूपा को न तो अच्छा भोजन मिलता है और न पर्याप्त वस्त्र ही। बाल्यावस्था का यह अभाव सोना को असमय ही प्रौढ़ बना देता है।

मध्यम वर्गीय परिवार में पोषित सुमन और जालपा जहाँ विवाह से पूर्व और विवाह के बाद भी आभूषणों के लिये हट करती है, और भोग विलास पर जान देती हैं, वहाँ सोना विवाह से पूर्व इस बात के लिये चिंतित है कि उसके पिता को उसके विवाह के लिये ऋण लेना पड़ रहा है। वह सोचती है– ''बाप ने मर–मर कर पाला–पोसा उसका बदला क्या यही है कि उनके घर से जाने लगूँ तो उन्हे कर्ज से और लादती जाऊँ।' इस सम्बन्ध में सोना साहस का परिचय देती है और सिलिया को भेजकर अपने मंगेतर मथुरा के सामने अपनी वास्तविक स्थिति स्पष्ट कर देती है। बाल्यवस्था के इस अभाव के कारण ही होरी की छोटी पुत्री रूपा की नारी सुलभ भावनाएँ कुण्ठित हो गयीं। प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर भी रूपा को विवाह के बाद किसी प्रकार के अभाव का अनुभव नहीं होता।

प्रेमचन्द जी ने अपने कथासाहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाया है कि विवाह से पूर्व नारी जिन परिस्थितियों में रहती हैं उन्हीं के अनुरूप उनकी रूचियों एवं जीवन दृष्टि का विकास होता है, और आगे चलकर उसका वैवाहिक जीवन भी उन परिस्थितियों से प्रभावित होता है। प्रेमचन्द जी के सेवा सदन उपन्यास का केन्द्र बिन्दु वैश्या की समस्या है और गबन उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने मध्यवर्ग की समस्याओं को उभारा है। मूल समस्या पर विचार करने के साथ–साथ इन दोनों ही उपन्यासों में उपन्यासकार ने सुमन और जालपा की विवाह से पूर्व की परिस्थितियों का विश्लेषण भी किया है। 'सेवासदन' की सुमन में बाल्यावस्था में ही भोग–विलास पूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रवृत्ति विकसित हो गयी थी। दरोगा कृष्णचन्द अपनी पुत्रियों के लिये नित्य अच्छे से अच्छे कपड़े तथा अन्य वस्तुएँ लाया करते थे। फलतः विवाह के बाद सुमन स्वाद लिप्सा के लिये पति से छल–कपट करती है। अपने पड़ोसियों के सामने अपने वैभव का प्रदर्शन करने के लिये रेशमी साड़ी पहनकर बैठती है और खूँटी पर रेशमी जाकेट लटका देती है। लेकिन इस प्रवृत्ति से उसकी विलासी प्रवृत्ति सन्तुष्ट नहीं होती। उसके हृदय में सदैव असन्तोष बना रहता है। अपनी पड़ोसियों को गहने बनवाते देख कर वह स्वयं को अभागिनी समझती है। इस असंतोष के कारण पर प्रेमचन्द जी प्रकाश डालते हुए लिखते हैं –''उसने अपने घर यही सीखा था कि मनुष्य को जीवन में सुखभोग करना चाहिये।''

इस प्रकार सुमन के असफल दाम्पत्य जीवन का मूल कारण उन परिस्थितियों में निहित है जिनमें जालपा का वैवाहिक जीवन प्रभावित होता है। जालपा का पालन–पोषण आभूषण मण्डित वातावरण में हुआ है। उसके पिता दीनदयाल उसकी माता के लिये नित्य नये आभूषण बनवाते हैं। इस वातावरण में रहकर जालपा भी आभूषणों से प्रेम करने लगती है। इस सम्बन्ध में प्रेमचन्द जी कहते हैं –''दीनदयाल जब कभी प्रयाग जाते, तो जालपा के लिये कोई न कोई आभूषण जरूर लाते। उनकी व्यावहारिक दृष्टि में यह विचार ही न आता था कि जालपा किसी और चीज से अधिक प्रसन्न हो सकती है। .....इसलिये जालपा आभूषणों से खेलती थी, यही उसके खिलौने थे।'' अपनी माता का चन्द्र हार देखकर जालपा चन्द्रहार की लालसा व्यक्त करती है, लेकिन उसे आश्वासन दिया जाता है कि उसके लिये चन्द्रहार ससुराल से आएगा। इस प्रकार विवाह से पूर्व जालपा विवाह का वास्तविक अर्थ तो समझ ही नही पाती, वरन् उसके हृदय में इस सम्बन्ध में भ्रान्ति का बीजारोपण हो जाता है। विवाह में अच्छे–अच्छे गहने मिलें, उसकी दृष्टि से यही विवाह का वास्तविक अर्थ है। ससुराल से चन्द्र हार मिलने की बात पर वह सोचती है –''ससुराल में चन्द्र हार आयेगा वहाँ के लोग उसे माता–पिता से अधिक प्यार करेंगे। तभी तो जो चीज यहाँ के लोग बनवा नहीं सकते वह वहाँ से आयेगी।'' जालपा की यह आभूषण लालसा इतनी प्रबल हो गयी है कि विवाह के समय में चढ़ावे में चन्द्रहार न आने पर वह उन्मत्त सी हो जाती है। विवाह के बाद भी वह रामनाथ से निरन्तर आभूषणों के लिये आग्रह करती रहती है। उसकी दृष्टि में पति प्रेम की कसौटी भी आभूषण ही है। पति यदि गहने नहीं बनवाकर देता तो वह उसे निष्ठुर समझने लगती है।

जालपा और सुमन के वैवाहिक जीवन की समस्याएँ यद्यपि भिन्न–भिन्न है तथापि उनका मूल एक ही स्थल पर विद्यमान हैं और यह स्थल है–विवाह से पूर्व भोग–विलास पूर्ण वातावरण। इन दोनों ही नारियों के संदर्भ में प्रेमचन्द जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विवाह पूर्व जहाँ कन्या को विवाह का सच्चा अर्थ नहीं समझाया जाता, वहाँ वैवाहिक जीवन इसी प्रकार असफल होता है और उसके परिणाम–स्वरूप अनेक नवीन समस्याएँ सामने आती हैं।

बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था में प्रवेश करने के बाद नारी और पुरुष का एक दूसरे पर आकर्षित होना स्वाभाविक है। बाल्यावस्था का स्नेह सम्बन्ध प्रायः आगे चलकर प्रेम में परिणत हो जाता है। ऐसी स्थिति में

किसी दूसरे पुरुष से विवाह होने पर वैवाहिक जीवन में अनेक विसंगतियाँ आ जाती हैं। प्रेमचन्द जी ने 'वरदान' उपन्यास में इस समस्या पर प्रकाश डाला है। 'वरदान' की विरजन प्रताप के साथ अपने विवाह के स्वप्न देखने लगती है, लेकिन उसका विवाह कमलाचरण से होता है। इस विवाह के कारण प्रताप और विरजन दोनों को ही दुःख होता है। 'विद्रोही' कहानी की तारा और कृष्णा के बाल्यकाल की मैत्री आगे चलकर प्रेम सम्बन्ध में परिणत हो जाती है। अन्य पुरुष से विवाह के पश्चात् तारा तो स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेती है किन्तु कृष्णा जीवन पर्यन्त निरुद्देश्य भटकता रहता है।

जहाँ विवाह के पूर्व मातृत्व की संभावना आ जाती है वहाँ प्रेम सम्बन्ध लज्जास्पद बन जाता है। प्रेमचन्द जी की प्रेम सम्बन्धी धारणा अत्यन्त उच्च और आदर्शपूर्ण थी। इसलिये आदर्श प्रेम–सम्बन्धों को उन्होंने शारीरिक सम्बन्धों से दूर रखा है। लेकिन जहाँ वे किसी सामाजिक समस्या के उद्घाटन के लिये स्त्री पुरूष के सम्बन्ध पर दृष्टिपात करते हैं वहाँ पर उन्होंने इस समस्या का भी स्पर्श किया है। 'मिस पद्मा' कहानी में पाश्चात्य आदर्शों से प्रभावित नवयुवती का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द जी ने दिखाया है कि विवाह से पूर्व शिशु उत्पन्न होने की संभावना नारी के लिये कितना अप्रिय प्रसंग है। पद्मा प्रोफेसर प्रसाद से बिना विवाह किये ही उसके साथ रहने लगती है। प्रसाद कुछ दिन भोग–विलास के पश्चात उसे छोड़कर चला जाता है। पद्मा के शिशु उत्पन्न होने वाला है लेकिन 'पद्मा के लिये मातृत्व अब बड़ा ही अप्रिय प्रसंग था, उस पर एक चिंता मँडराती रहती, कभी–कभी वह भय से काँप उठती और पछताती।'' प्रेमचन्द जी ने विवाह से पूर्व की नारी समस्याओं का भी उद्घाटन किया है, जिससे नारी जीवन की समस्याओं के सम्बन्ध में कथाकार की गहन अन्तर्दृष्टि का परिचय मिलता है।

❖ वैवाहिक जीवन की समस्याएँ

स्त्री और पुरूष का पारस्परिक सहयोग और साहचर्य वैवाहिक जीवन का मूलाधार है। विवाह एक प्रकार से स्त्री और पुरुष दोनों के ही आत्म विकास का साधन है। लेकिन प्रेमचन्द जी के युग में विवाह का वास्तविक अर्थ भुला दिया गया था। विवाह के सम्बन्ध में अनेक कुरीतियों को प्रधानता दी जाने लगी थी।

नारी की वैवाहिक समस्याओं का जितना विशद् चित्रण प्रेमचन्द जी के कथा साहित्य में हुआ है, उतना कदाचित् हिन्दी का कोई कथाकार कर पाया। इनकी नारी के वैवाहिक जीवन की समस्याओं की पकड़ अत्यन्त सुदृढ़ और मनोवैज्ञानिक है। इनके युग में वैवाहिक समस्याओं की एक श्रृंखला सी विद्यमान थी। प्रेमचन्द जी का इस दृष्टि से विशेष महत्व है कि इस श्रृंखला की समस्त कड़ियों को क्रमशः खोलते चले गये और इस प्रकार इस समस्या के मूल तक अपने पाठकों को ले गये।

• दहेज प्रथा

वैवाहिक जीवन की कुप्रथाओं के कारण कन्या का विवाह माता–पिता के लिये जटिल समस्या बन जाता है। इसलिये कन्या के विवाह को लेकर पारिवारिक चिन्ताओं का सूत्रपात होता है। माता–पिता की इस चिन्ता एवं उसके कारणों से प्रेमचन्द जी परिचित थे। 'गोदान' में उन्होंने अभिभावकों की इस चिन्ता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

गरीब परिवार के लिये कन्या के विवाह की चिन्ता और भी जटिल समस्या बन जाती है। होरी ऋण लेकर अपने खेतों का लगान चुकाता है लेकिन पुत्री के विवाह की चिन्ता उसके लिये सर्वाधिक भयंकर है। उसकी इस चिन्ता को प्रेमचन्द जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–''सोना सत्रहवें साल में थी और इस साल उसका विवाह करना आवश्यक था। होरी तो दो साल से इसी फिक्र में था, पर हाथ खाली होने से कोई काबू न चलता था। मगर इस साल जैसे भी हो उसका विवाह कर देना ही चाहिये, चाहे कर्ज लेना पड़े चाहे खेत गिरों रखने पड़ें।''

हिन्दू विवाह की विभिन्न समस्याओं में दहेज प्रथा प्रेमचन्द युगीन समाज की सबसे गम्भीर समस्या थी। यह सच है कि हिन्दू समाज में बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि बहुत सी रूढ़ियाँ उत्पन्न हो गई थीं। लेकिन दहेज प्रथा ने व्यक्ति एवं सम्पूर्ण समाज के सामने जितनी गम्भीर सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न की है उसका उदाहरण संसार के किसी भी दूसरे समाज में देखने को नहीं मिलता। विवाह सम्बन्धी अधिकांश समस्याओं के मूल में दहेज प्रथा ही थी।

कन्या के विवाह के लिये माता–पिता की यह चिन्ता समाज में प्रचलित दहेज प्रथा के कारण है। अपने कथासाहित्य में प्रेमचन्द जी ने दिखलाया है कि दहेज प्रथा के कुपरिणाम सर्वाधिक धनहीन नारियाँ झेलती हैं। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद धनहीन वर्ग पुत्री के विवाह के लिये अलग से धन बचाकर नहीं रख पाता इसलिये पुत्री का विवाह इस वर्ग के सामने आर्थिक समस्या बनकर आता है। दहेज की माँग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रेमचन्द जी ने 'उद्धार' कहानी में दहेज के कारण उठे नारी जीवन का एक यथार्थ चित्र अंकित किया है। ''ऐसे माता–पिताओं की कमी नहीं है, जो कन्या की मृत्यु पर प्रसन्न होते हैं, मानो सिर से बाधा टली।''

अपने 'सेवासदन' और निर्मला' उपन्यासों में प्रेमचन्द जी ने दहेज प्रथा और उसके कुपरिणामों का चित्रण किया है। इन उपन्यासों में प्रेमचन्द जी ने दिखलाया है कि दहेज प्रथा के कुपरिणाम सर्वाधिक मध्यवर्गीय नारी झेलती है। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद मध्यवर्ग पुत्री के विवाह के लिये अलग से बचाकर नहीं रख पाता इसलिये पुत्री का विवाह मध्यवर्ग के सामने आर्थिक समस्या बनकर आता है। दहेज की माँग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षित परिवारों में भी यह कुप्रथा प्रचलित है। 'सेवासदन' के दरोगा कृष्णचन्द निःस्वार्थ और निर्लोभी व्यक्ति हैं। पुलिस में रहकर भी वे रिश्वत नहीं लेते। अपनी पुत्रियों के विवाह के विषय में वे निश्चिन्त हैं क्योंकि वो समझते हैं कि शिक्षित परिवार में दहेज का प्रश्न उठेगा ही नहीं ''समाचार पत्रों में जब वे दहेज के विरोध में बड़े–बड़े लेख पढ़ते तो प्रसन्न होते। चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं।'' लेकिन इस सम्बन्ध में उन्हें कुछ यथार्थ का अनुभव तब हुआ जब उन्होंने सुमन के लिये वर खोजना आरम्भ किया। ''उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वरों का मोल उनकी शिक्षा के अनुसार है, राशि वर्ण ठीक हो जाने पर जब लेन–देन की बातें होने लगती तब कृष्णचन्द की आँखों के सामने अंधेरा छा जाता था। कोई चार हजार सुनाता कोई पाँच हजार और कोई इससे भी आगे बढ़ जाता। ऐसी स्थिति में दरोगा कृष्णचन्द के सामने दो ही विकल्प शेष रह जाते या तो पुत्री का विवाह किसी कुपात्र से करके इस उत्तरदायित्व से मुक्त हो जायें या फिर रिश्वत लेकर दहेज की रकम जुटायें। कृष्णचन्द ने दूसरे उपाय का ही आश्रय लिया।

'निर्मला' उपन्यास में दहेज की समस्या अपने यथार्थ रूप में सामने आयी है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि दहेज ही विवाह का मुख्य आधार बन गया है। दहेज देने में समर्थ माता–पिता अपने पुत्री के लिये योग्य से योग्य वर खोज सकते हैं लेकिन धनाभाव में पुत्री का विवाह उनके लिये कठिन समस्या बन जाता है। उदयभानु अपनी पुत्री निर्मला का विवाह अपने जीवनकाल में भालचन्द्र सिन्हा के पुत्र भुवन मोहन से निश्चित कर चुके थे, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद पर्याप्त दहेज न मिलने की आशा के कारण भाल चन्द्र सिन्हा ने यह रिश्ता तोड़ दिया। भालचन्द्र सिन्हा जैसे लोभी व्यक्ति स्वार्थ के लिये अपने पुत्र का विवाह उसी से करना चाहते हैं, जिसके यहाँ अधिकाधिक धन मिले। परिणामस्वरूप विधवा कल्याणी के लिये पुत्री का विवाह कठिन समस्या बन जाता है। कल्याणी किसी भी तरह से इस समस्या से मुक्त हो जाना चाहती है। क्योंकि कन्या को घर में नहीं बिठाया जा सकता है। निर्मला के लिये वर खोजने का कार्य वह अपने पुरोहित पण्डित मोटेराम शास्त्री को सौंपती है। वैवाहिक सम्बन्ध निश्चित करते समय धन को प्रमुखता दी जाती है। कन्या के रूप गुण को नहीं। इस सम्बन्ध में प्रेमचन्द जी व्यंग करते हैं–''वह निर्मला रूपवती है, गुणशील है, चतुर है, कुलीन है तो हुआ करे, दहेज है तो सारे दोष गुण हैं। गुणों का कोई मूल्य नहीं केवल दहेज का मूल्य है।'' निर्मला के विवाह की जहाँ भी बात चलायी जाती थी वहीं पर दहेज रूपी भयंकर दानव सामने आकर खड़ा हो जाता था।

प्रेमचन्द जी ने अपने 'निर्मला' उपन्यास और 'कुसुम' कहानी में स्पष्ट कर दिया है कि दहेज जैसी कुप्रथा के लिये लड़के के माता–पिता ही उत्तरदायी नहीं हैं वरन् इसके लिये युवक वर्ग भी दोषी हैं और ऐसे नवयुवकों की लोभी प्रवृत्ति के कारण कितनी ही नवयुवतियों का जीवन नष्ट हो जाता है।

प्रेमचन्द किसी समस्या का उद्घाटन मात्र करके अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेते। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से तत्कालीन समाज की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार दहेज की समस्या तभी सुलझ सकती है, जब नवयुवक वर्ग आत्म–बल का परिचय दे। 'कायाकल्प' उपन्यास का चक्रधर साहसी नवयुवक है वह दहेज प्रथा के विरूद्ध है। उसके विवाह के लिये बात चलने पर जब उसकी माता दहेज की बात उठाती है उस समय वह स्पष्ट रूप से उसका विरोध करता है। उसकी दृष्टि में विवाह के समय दहेज तय करना उसको बेंचना है।

यह समस्या समाज में इतनी गहराई तक बैठ गयी है कि कानून बनाकर भी इसे रोका नहीं जा सकता। प्रेमचन्द जी के मतानुसार–''इसके निराकरण का एकमात्र उपाय है इसके विरुद्ध जनमत तैयार करके समाज में इस कुप्रथा के प्रति घृणा उत्पन्न करना।''

• अनमेल विवाह

नारी जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है। अधिकतर दहेज की कुप्रथा के कारण ही अनमेल विवाह होते हैं। प्रेमचन्द जी ने अपने 'सेवासदन' और 'निर्मला' उपन्यासों में दिखलाया है कि किस प्रकार दहेज के अभाव में नारी कुपात्र के गले मढ़ दी जाती है। 'सेवासदन' की सुमन का गजाधर प्रसाद से और 'निर्मला' की निर्मला का मुन्शी तोताराम से विवाह अनमेल विवाह है। ये दोनों ही अनमेल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण हुए है।

सुमन का गजाधर प्रसाद से विवाह अनमेल विवाह है–आयु की दृष्टि से भी और स्वभाव की दृष्टि से भी। धनाभाव के कारण सुमन के मामा उमानाथ के लिये योग्य वर खोजना कठिन हो गया। अतः विवश होकर उन्होंने सुमन का विवाह प्रौढ़ दोहाजू गजाधर से कर दिया। सुमन और गजाधर में आयु के अन्तर के साथ–साथ स्वभाव भी एक दूसरे के विपरीत है। सुमन बाल्यावस्था से ही सुख सुविधाओं में पली थी, वहीं गजाधर प्रसाद कृपण स्वभाव का है। उसके स्वभाव का परिचय प्रेमचन्द जी ने इस प्रकार दिया है ''जलपान की जलेबियाँ उसे विष के समान लगती थीं, दाल में घी देखकर उसके हृदय में शूल होने लगती।'' इस स्वभाव वैषम्य और आयु के अन्तर के कारण सुमन और गजाधर प्रसाद में कभी सच्चा स्नेह नहीं हो पाया। उनमें वास्तविक स्नेह और सद्भाव का सर्वथा अभाव है जो सुखी जीवन का मूलाधार है।

निर्मला का विवाह पर्याप्त दहेज के अभाव में मुन्शी तोताराम से हुआ जो कि चालीस वर्ष के हैं। निर्मला को तोताराम से बोलने में संकोच होता है। प्रेमचन्द जी लिखते हैं–''अब तक ऐसा ही आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर निकलती थी। अब उसकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। जिसे वह प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी।''

प्रेमचन्द वृद्ध–विवाह के कुपरिणामों को भी प्रकाश में लाये हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन में असंतोष की भावना जन्म लेती है। लेकिन वृद्ध विवाह का परिणाम अन्ततोगत्वा और भयंकर होता है। वृद्ध विवाह प्रायः युवती को समय से पहले ही विधवा बना देता है। 'गबन' के वकील इन्दुभूषण ने सन्तान लालसा से वृद्धावस्था में रतन से विवाह किया इन्दुभूषण के सन्तान तो नहीं हुई लेकिन विवाह के कुछ वर्ष बाद रतन को निराश्रित छोड़कर वे स्वर्ग सिधार गये। उनके अन्तिम समय में रतन ने जालपा को जो पत्र लिखा उससे उनकी मनः स्थिति का परिचय मिलता है। वकील साहब मृत्यु शैय्या पर जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे हैं, उनका अन्तिम समय आ गया है, रतन इस तथ्य से परिचित है। वह जालपा को अपने पत्र में लिखती है– ''पूर्वजन्म का संस्कार केवल मन को समझाने की चीज है। जिस दण्ड का हेतु ही हमें न मालूम हो, उस दण्ड का मूल्य ही क्या। इस अंधेरे निर्जन काँटों भरे जीवन मार्ग में मुझे केवल एक टिम–टिमाता हुआ दीपक मिला था। मैं उसे आंचल में छुपाये विधि को धन्यवाद देती हुई, गाती चली जाती थी, पर वह दीपक भी मुझसे छीना जा रहा है। इस अन्धकार में मैं कहाँ जाऊँगी, कौन मेरा रोना सुनेगा, कौन मेरी बाँह पकड़ेगा।'' इन शब्दों में रतन की मनोव्यथा पूर्णतः उमड़कर आ गयी है।

प्रेमचन्द्र जी की 'नरक का मार्ग' कहानी में वृद्ध विवाह का अपेक्षाकृत भयंकर परिणाम उभर कर सामने आया है। साथ ही कहानीकार ने नारी मनोभावों का उद्घाटन किया है जिसके कारण वृद्ध से विवाहित युवती कुमार्ग पर चलने लगती है।

वृद्ध से विवाहित युवती की प्रेमाकांक्षा अतृप्त रह जाती है। इस कहानी की युवती पति की मृत्यु के बाद प्रेम पाने के लिए विकल हो उठी, लेकिन निर्मल और स्वच्छ प्रेम की खोज करते–करते वह गन्दे विषाक्त नाले में गिर पड़ी। इस प्रकार वृद्ध पुरूष से विवाहित युवती की अतृप्त प्रेमाभिलाषा पति के जीवनकाल में ही या उसकी मृत्यु के बाद नारी को पथ–भ्रष्ट और कुमार्ग गामिनी बना देती है।

'सेवासदन' और 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने अनमेल विवाह और उसके कुपरिणामों का चित्रण करते हुए उसके कारणों पर भी प्रकाश डाला है। इन उपन्यासों में दिखलाया है कि युवती स्त्री का विवाह जहाँ प्रौढ़ या वृद्ध से होता है वहाँ अनमेल विवाह के लिए दहेज प्रथा उत्तरदायी है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर

लड़की के माता–पिता पर्याप्त दहेज नहीं दे पाते। सेवासदन और निर्मला में प्रेमचन्द्र ने अनमेल विवाह के कुपरिणामों को भी पूर्णतया उभार दिया है। अनमेल विवाह के कारण सुमन वेश्या का घृणित जीवन अपनाने को बाध्य हो गयी। निर्मला जीवन भर घुटती रही और अन्त में अकाल मृत्यु को प्राप्त हुई। इस प्रकार से प्रेमचन्द्र जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अनमेल विवाह के कारण कितनी ही स्त्रियों की आशाएँ और आकांक्षाएँ नष्ट हो जाती हैं।

प्रेमचन्द जी ने तत्कालीन वैवाहिक प्रथा और उसके दोषों पर सूक्ष्म दृष्टि डाली थी। उन्होंने सुमन, सुखदा और सुमित्रा के संदर्भ में यह स्पष्ट कर दिया है कि माता–पिता विवाह के सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते, इसलिए पति–पत्नी के विचारों और जीवन–मूल्यों में बड़ा अन्तर रहता है। परिणाम स्वरूप दाम्पत्य जीवन नरक बन जाता है। सुमित्रा के माता–पिता ने लाला बद्री प्रसाद की सम्पन्नता एवं धन का वैभव देखकर सुमित्रा का विवाह किया है। कमला प्रसाद के विचारों और स्वभाव को उन्होंने जानने की आवश्यकता ही नहीं समझी। इसी प्रकार 'कर्म भूमि' के अमर और सुखदा का विवाह भी दोनों परिवारों की सम्पत्ति और धन–वैभव को ही दृष्टि में रखकर हुआ है।

प्रेमचन्द जी पति–पत्नी के स्वभाव वैषम्य की अपेक्षा आयु के अन्तर को अधिक भयंकर मानते हैं। स्वभाव में वैषम्य होने पर पति–पत्नी थोड़ी सी उदारता और सहिष्णुता अपनाकर एक दूसरे के अनुकूल बना सकते हैं, लेकिन आयु में अन्तर का तो कोई निराकरण ही नहीं है।

• बाल विवाह

बाल विवाह की आज की प्रसन्नता आगे चलकर किस प्रकार दारुण दुःख में परिणत हो जाती है, इसका कारुणिक चित्रण प्रेमचन्द जी ने 'नैराश्य लीला' तथा सुभागी कहानी में किया है।

प्रेमचन्द जी ने बाल–विवाह के दुष्परिणाम में कैलासी के माता–पिता को तो दुःखी दिखाया ही है साथ ही बाल–विधवाओं के प्रति लोगों के अनुदार दृष्टिकोण को भी व्यक्त किया है। लोगों के संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण ऐसी बाल–विधवाओं को आदेश दिया जाता है–''बेटी संसार में रहकर तो संसार की सी करनी ही पड़ेगी।'' लेखक माता–पिता की अक्षम्य त्रुटियों और समाज के लोगों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से दुःखी बाल–विधवा में यही आत्मरक्षा के भाव भरना चाहते हैं, क्योंकि हमारा समाज इतना अनुदार है कि इस शक्ति के अभाव में ऐसी विधवाओं का समाज में रहना भी कठिन कर देगा– ''बिना माँझी के नाँव पार लगाना कठिन है, जिधर हवा पाती है बह जाती है।'' कह कर लेखक बाल–विधवाओं के पुनर्विवाह की ओर संकेत करते हैं। कैलासी के समान ही प्रेमचन्द जी ने सुभागी के बाल–विवाह का भी चित्रण किया है। कैलासी का विवाह तो तेरह वर्ष की अपरिपक्वावस्था में ही कर दिया गया और वह इसी अवस्था में विधवा भी हो गयी, किन्तु सुभागी और कैलासी के समाज में लेखक ने कुछ अन्तर रखा है। कैलासी की पारिवारिक परिस्थितियाँ अनुकूल हैं, पर समाज उसके प्रति अनुदार है। जबकि सुभागी के भैया–भाभी उसके प्रतिकूल स्वभाव के हैं और समाज उसके प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण रखता है।

प्रेमचन्द जी के कथा साहित्य में बाल–विवाह के अधिक उदाहरण उपलब्ध नहीं होते, परन्तु फिर भी उन्होंने अपनी कहानी 'नैराश्य लीला' में इस समस्या का चित्र प्रस्तुत किया और वही इसकी ज्वलन्तता के लिए पर्याप्त है। वस्तुतः लड़की का छोटी उम्र में विवाह न करना और यदि इस प्रकार की त्रुटि हो भी गयी हो तो विधवा होने पर पुनर्विवाह के द्वारा उसमें संशोधन करना ही समस्या का हल है। यही संकेत प्रेमचन्द्र जी ने दिया है।

प्रेमचन्द जी ने नारी की वैवाहिक समस्याओं का विशद विवेचन करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि इन समस्याओं का मूल तत्कालीन दूषित समाज व्यवस्था में विद्यमान है और विवाह का वास्तविक उद्देश्य भुलाया जा चुका है। परिणामस्वरूप कितनी ही कन्याओं का जीवन नष्ट हो जाता है।

• अन्तर्जातीय विवाह

प्रेमचन्द यद्यपि जाति–पाँति, छुआ–छूत और ऊँच–नीच के पक्षधर नहीं हैं, उनकी विशालता इस प्रकार के निम्न कोटि के विचारों से ऊपर उठकर है, लेकिन जब भी उन्होंने विवाह के अन्तर्जातीय प्रश्न को खड़ा

किया वहीं पर उनकी लेखनी रूक गयी। 'गोदान' के सिलिया और मातादीन अन्तर्जातीय विवाह का ही एक दृश्य है। झुनिया और गोबर से उन्होंने निर्धारित दण्ड का भुगतान करा दिया।

इसी प्रकार प्रेमा केशव के साथ हर तरह के कष्टों को सहने के लिए तैयार है, किन्तु केशव में इतना साहस नहीं है कि पिता की आज्ञा की अवहेलना कर वेश्या पुत्री प्रेमा से विवाह कर सकें। ''जिस केशव को प्रेमा ने अपने अन्तःकरण से वर लिया था, वह इतना निष्ठुर हो जाएगा, इसकी उसको रत्ती भर भी आशा न थी।

अन्तर्जातीय विवाह को जो लोग एक समस्या मानते हैं, उनकी इस समस्या के निराकरण के लिए प्रेमचन्द जी ने गोदान उपन्यास में एक बात सुझायी है। यदि समाज इस संदर्भ में असमर्थ है तो ऐसी विपरीत परिस्थितियों में चमारिन सिलिया और पं.मातादीन की भाँति इस समाज को साहस के साथ डटकर सामना करना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस समस्या का कोई दूसरा हल नजर नहीं आता, क्योंकि भारतीय समाज इतनी उदारता नहीं रखता कि वह सीधे सरल व्यक्ति को रूढ़िग्रस्त विचारों के विरूद्ध सहयोग दे सकें।

• विवाह विच्छेद

आधुनिक वैयक्तिक जीवन मूल्यों ने हमें आत्मकेन्द्रित बनाकर सम्बन्धों के प्रति बेईमान बना दिया है। पति–पत्नी के कभी न टूटने वाले बंधन को क्षणिक बनाकर पारिवारिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके विवाह विच्छेद को प्रश्रय दिया जाने लगा है।

प्रेमचन्द जी ने अपने कथा–साहित्य में विवाह विच्छेद की समस्या का चित्रण भी किया है। गाँवों में स्त्रियों पर तरह–तरह के आरोप लगाकर उन्हें छोड़ दिया जाता था, किन्तु शिक्षित समाज में स्त्री ने पुरुष से मुक्त होने के लिए और पुरूष ने स्त्री से मुक्त होने के लिए विवाह–विच्छेद का माध्यम तलाक को अपनाया। प्रेमचन्द जी ने घुटनभरे वातावरण में जीने से विवाह–विच्छेद को सुविधा–जनक माना है। कारण यह है कि कोई स्त्री पुरुष के अत्याचार सहते, तलवे चाटते खुद को मिटा न ले।

प्रेमचन्द जी ने नारी में बदले जीवन–मूल्य और उनमें आई चेतना का सशक्त उदाहरण 'गोदान' उपन्यास में रायसाहब की बेटी मीनाक्षी के माध्यम से दर्शाया है – ''गुजारे की मीनाक्षी को जरूरत न थी, मैके में वह बड़े आराम से रह सकती थी मगर वह दिग्विजय सिंह के मुख में कालिख लगाकर वहाँ से जाना चाहती थी। ''प्रेमचन्द जी विवाह को एक सामाजिक समझौता मानते हैं, उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को। समझौते से पहले मनुष्य स्वतंत्र है और समझौता हो जाने के बाद दोनों को ही सूझ–बूझ से काम लेना चाहिए।

• वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर सन्देह

वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर संदेह करना उसे जीता ही निगल जाने के समान है। प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। किस तरह पुरुष का शंकालु हृदय नारी की जीवन–लीला अव्यवस्थित करके रख देता है। 'सेवा सदन' उपन्यास की नायिका सुमन की जिन्दगी तो पहले से नारकीय यातनाओं से भरी थी, किन्तु एक दिन जब वह वकील साहब के यहाँ उत्सव में जाती है और वहाँ पर भोली का मुजरा सुनते उसे रात हो जाती है। देर रात घर वापस आती है तब गजाधर कहता है– ''अब यह धांधली एक न चलेगी, साफ–साफ बताओ तुम अब तक कहाँ रही? मैं तुम्हारा रंग आजकल देख रहा हूँ। अंधा नहीं हूँ मैंने भी त्रिया चरित्र पढ़ा है। सुमन लाख खुशामद करती है, पर गजाधर एक नहीं सुनता, बराबर आरोप पर आरोप लगा रहा था। ''मन में जब भ्रम प्रवेश हो जाता है, तो उसका निकलना कठिन हो जाता है। अन्त में गजाधर सुमन को घर से निकाल देता है और उसे भोली की शरण में जाकर वेश्या बनने को मजबूर होना पड़ता है।

'निर्मला' उपन्यास में तोताराम अपने ही पुत्र मंसाराम को लेकर अपनी पत्नी निर्मला पर शक करता है, और मंसाराम को बोर्डिंग भेज देता है। जहाँ उसको टी.बी. हो जाती है, किन्तु फिर भी अपने मरते हुए बेटे से भी पत्नी के सतीत्व नष्ट हो जाने का भय है, और वह उसे घर न लाकर अस्पताल ले जाता है। अस्पताल में निर्मला उसे देखने जाती है तब तोताराम कहता है कि – ''यहाँ क्या करने आयी हो?'' इन शब्दों में तोताराम की संदेहवादी दृष्टि सामने आ जाती है।

इस तरह से पुरुष का शंकालु हृदय नारी को निरन्तर यातानाएँ देता जाता है और खुद का जीवन भी तनाव–ग्रस्त कर लेता है।

• नारी द्वारा नारी का शोषण

नारी द्वारा नारी का शोषण कोई नई बात नहीं है, अपितु यह तो सदियों से चली आ रही परम्परा है। प्रेमचन्द के युग में भी यह समस्या विद्यमान थी, अतः प्रेमचन्द ने इसे कथा–साहित्य में स्थान दिया।

सामान्यतः देखा जाता है कि जब युवती दुल्हन के रूप में घर आती है तो वहाँ का वातावरण एक विशेष प्रकार का होता है और उसे वहाँ के अनुसार स्वयं को ढालना होता है। प्रेमचन्द ने नव वधू की समस्याओं का चित्रण वहाँ पर किया है, जहाँ शासन–प्रिय सास अपने कुचक्रों से उसे तंग करना आरम्भ कर देती है। ननद तो अपनी माँ का पक्ष लेती है। फिर ऐसी नारी के दुःख की कथा का अन्त कहाँ?

प्रेमचन्द ने सास–बहू के पचड़ों को स्वयं अपने ही घर में देखा था। ''चाची मेरी पत्नी पर शासन करती थीं, उसकी शिकायत भी चाची मुझसे एकान्त में किया करती थी। वह भी अपने किस्मत को रोती थी, अगर बीच में चाची न होती तो शायद मेरी उनकी जिन्दगी एक साथ बीत जाती।'' ठीक इसके विपरीत 'ममता' कहानी में सास को अपनी बहू की स्वतन्त्र जीवन–शैली में बाधक होने के कारण यातनाएँ झेलनी पड़ती है। 'शान्ति' की श्यामा सास के प्रति कहती है कि मुझे बिल्कुल लौंडी समझती थी। 'निर्मला' उपन्यास में तोताराम की बहन रुक्मणी ने आरम्भ में तो निर्मला का जीना ही हराम कर दिया था। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में सुमित्रा की सास देवकी का व्यवहार भी कुछ ऐसा ही है। 'कायाकल्प' में निर्मला मानती है कि मैं बहू के कारण ही पुत्र से वंचित हुई हूँ। 'गोदान' उपन्यास में झुनिया को शरण देने वाली धनिया कहती है – ''इसी चुड़ैल के पीछे डाँड देना पड़ा, बिरादरी में बदनामी हुयी, सारी दुर्गति हो गई, उसके जीवन की निधि को उसके हाथ से छीन लेना चाहती है।

❖ विवाहेत्तर समस्यायें

विधवा जीवनः भारतीय समाज को प्राचीनकाल से ही वैधव्य की समस्या विचलित कर रही है। प्रेमचन्द युगीन समाज का सबसे निरीह प्राणी विधवा ही थी, जिसकी निरीहता का मूल कारण समाज के नैतिक मूल्य हैं। जिसके कारण स्त्री से सदैव कठोर पतिव्रत–पालन की आशा की जाती थी। विधवा नारी की इस दयनीय दशा का चित्रण प्रेमचन्द जी के उपन्यासों और कहानियों में देखने को मिलता है।

'प्रतिज्ञा' उपन्यास की पूर्णा 'गबन' उपन्यास की रतन और 'निर्मला' उपन्यास की रुक्मणी आदि भारतीय विधवाओं के जीवन के प्रतीक हैं। प्रेमचन्द जी के उपन्यास 'प्रतिज्ञा' का केन्द्र बिन्दु विधवा समस्या ही है, जिसकी नायिका पूर्णा विवाह के दो वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है। तत्पश्चात् उसे किन–किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है चित्रित किया गया है।

'धिक्कार' कहानी की मानी सोलह वर्ष की अवस्था में विधवा हो जाती है। माता–पिता के न होने के कारण चाचा वंशीधर के यहाँ रहती है, जहाँ उसे महरी की भाँति रहना पड़ता है। प्रेमचन्द जी के शब्दों में– ''न जाने क्यों चाचा और चाची उससे जलते रहते हैं। उसके आते ही महरी भी अलग कर दी गयी है। नहलाने धुलाने के लिए एक लौण्डा था उसे भी जवाब दे दिया गया पर मानी से इतनी उबार होने पर क्यों चाचा और चाची मुँह फुलाए रहते हैं। चाचा घुड़कियाँ जमाते हैं और चाची कोसती है। बाद में मानी इन्द्रनाथ से विवाह कर लेती है लेकिन चाचा के अपमानित करने पर अपने प्राण त्याग देती है। 'बेटों वाली विधवा' की विधवा फूलमती को अपने बेटों की स्वार्थपरता के कारण अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। विधवा स्त्री के प्रति उनके पुत्रों का व्यवहार भी अच्छा नहीं रहता।

प्रेमचन्द जी ने अपने कथासाहित्य में विधवाओं के विवाह का भी समर्थन किया है। उन्होंने स्वयं विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया था। 'गोदान' में गोबर और झुनिया का विवाह भी विधवा पुनर्विवाह को ही प्रदर्शित करता है।

• वेश्या समस्या

स्त्री जाति द्वारा झेली जाने वाली एक विकट समस्या है वेश्या जीवन। इस समस्या पर प्रेमचन्द जी ने अपनी दृष्टि डाली है और वेश्याओं के प्रति सहानुभूति भी व्यक्त किया है। आर्थिक विषमताओं और अत्याचारों के

फलस्वरूप स्त्रियाँ इस वृत्ति का सहारा लेती हैं। 'सेवासदन' की सुमन पति गजाधर प्रसाद द्वारा घर से निकाल देने पर पद्मसिंह का आश्रय लेती है, किन्तु वह भी उसे कुछ समय बाद निकाल देता है, ऐसे में सुमन भोलीबाई की शरण में गयी, मगर उस दशा में भी इस कुमार्ग से भागती रही। वह कहती है– ''मैंने चाहा कि कपड़े सींकर अपना निर्वाह करूँ, पर दुष्टों ने मुझे ऐसे तंग किया कि अन्त में मुझे इस कुएँ में कूदना पड़ा।''

'वेश्या' कहानी की माधुरी भी दयाकृष्ण के निश्छल व्यवहार से मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगती है और उसका साहचर्य पाकर वेश्यावृत्ति त्यागने को तैयार हो जाती है। प्रेमचन्द जी ने वेश्याओं के प्रति समाज की कठोरता के सम्बन्ध में माधुरी के माध्यम से अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं– ''नारी अपना बस रहते हुए कभी पैसों के लिए अपने को समर्पित नहीं करती, यदि वह ऐसा कर रही है तो समझ लो उसके लिए और कोई आश्रय नहीं, और पुरुष उसकी दुरावस्था से अपनी वासना तृप्त करता है। 'गोदान' में भी कहा गया है कि– ''मालती बाहर से तितली है, भीतर से मुक्मक्खी। उसका चहकना जीवन का आधार नहीं है बल्कि वह परिस्थितियों वश ऐसा करती है।

प्रेमचन्द जी की 'निर्वासन' और 'नरक का मार्ग' कहानियों में ऐसी कुटनियों और दलालों के शड्यंत्रों का चित्रण हुआ है। 'निर्वासन' कहानी की मर्यादा को एक दलाल धोखा देकर अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार 'नरक का मार्ग' कहानी की युवती विधवा को एक वृद्धा कुटनी षड्यंत्र से वेश्या बना देती है, ''जिसे धन की इच्छा हो उसे धन का, जिसे संतान की इच्छा हो उसे सन्तान का प्रलोभन देकर यह वृद्धा अपने वश में कर लेती है।

• पर्दा समस्या

प्रेमचन्द स्त्रियों के पूर्ण विकास के लिए पर्दा प्रथा के घोर विरोधी रहे हैं, क्योंकि यह प्रथा स्त्रियों के शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की दुर्गति में बहुत बड़ा हाथ रखती है। उन्होंने अन्य समस्याओं की भांति पर्दे की समस्या को भी उजागर किया है तथा उसके दुष्परिणामों को चित्रित किया है। अपनी कहानी 'कानूनी कुमार' में जहाँ उन्होंने तम्बाकू बहिष्कार बिल, होटल प्रचार बिल, सन्तान निगृह बिल आदि को असेम्बली में प्रस्तुत कराने की योजना कुमार द्वारा बनायी है वहाँ उपर्युक्त बिलों में पर्दा हटाव बिल भी सम्मिलित किया गया है। वे चाहते हैं कि एक ऐसा कानून बनाना चाहिए जिससे कोई स्त्री परदे में न रह सके।

• कुरूपता की समस्या

नारी जीवन की विविध समस्याओं में कुरूपता भी एक समस्या है। 'आभूषण' कहानी में इसी तथ्य को स्पष्ट किया गया है। 'आभूषण' कहानी के सुरेश सिंह सौन्दर्य न होने के कारण अपनी पत्नी शीतला को सहर्ष त्याग देते हैं। अनेक कटु–वाक्य सुनाते हैं, पत्नी की हर बात को आलोचना की दृष्टि से देखते हैं एवं उसका तिरस्कार करते हैं। तभी तो पति गृह त्यागकर ईश्वर को ललकारती हुई वह कहती है– ''ईश्वर के दरबार में पूछँगी कि तुमने मुझे सुन्दरता क्यों नहीं दी? बदसूरत क्यों बनाया? बहन स्त्री के लिए इससे दुर्भाग्य की बात नहीं कि वह रूपहीन हो। रूप में प्रेम मिलता है और प्रेम से दुर्लभ और कोई वस्तु नहीं। इस प्रकार सुन्दरता नारी जीवन को समुचित विकास हेतु आवश्यक प्रतीत होती है। कुरूप नारी का जीवन समस्यापूर्ण है।

• बहु विवाह

प्रेमचन्द के समय बहुविवाह का भी प्रचलन था, जिसके कारण नारी जीवन समस्या ग्रस्त था। विलास भावना से किए गये एकाधिक विवाह की प्रेमचन्द कड़े शब्दों में निन्दा करते हैं। प्रथम पत्नी के रहते हुए द्वितीय विवाह रचाने वाले लोगों की प्रथम स्त्री का जीवन घोर नरक यातना के सदृश हो जाता है। इसका वर्णन 'सौत' कहानी में विस्तृत रूप से देखा जा सकता है। 'सौत' में गोदावरी अपनी स्वेच्छा से पति की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए सौत का सहर्ष स्वागत करती है, परन्तु उसका भावी जीवन कंटकमय हो जाता है और अपना अन्त गंगा में जाकर करती है। इस प्रकार बहु विवाह निन्दनीय है।

❖ निष्कर्ष

नारी जीवन आरम्भ से अन्त तक अनेक समस्याओं से आच्छादित है। उसके पग–पग पर समस्या जटिल रूप से खड़ी है। कन्या, पत्नी, वधू, भगिनी, विधवा सभी रूपों में समस्याएँ हैं। कथाकार प्रेमचन्द ने नारी जीवन को निकट से देखा। उसकी जटिलताओं को परखा है उनके समाधान के प्रयत्न भी किये हैं। वे नारी जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक मानते हैं कि नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हों। दोनों में सद्भाव एवं सहयोग की भावना से ही समाज एवं परिवार अपने विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

❖ सहायक ग्रन्थ सूची

1. प्रेमचन्दः सेवासदन प्रथम, सरस्वती सीरीज,
   कायाकल्प संस्करण, 1986 ई.
   निर्मला संस्करण, 1986 ई.
   प्रतिज्ञा संस्करण, 1986 इ.
   गबन संस्करण, 1986 ई.
   गोदान संस्करण, 1986 इ.
2. प्रेमचन्द्रः मानसरोवर, आठ भाग आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
3. समाज शास्त्र : एस.पी.गुप्ता आगरा बुक स्टोर, आगरा
4. प्रेमचन्दः डॉ. प्रताप नारायण टण्डन जगदीश भारद्वाजसामयिक प्रकाशन
5. प्रेमचन्द और उनका युग – डॉ,रामविलास शर्मा– राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. प्रेमचन्द का नारी चित्रण – गीता लाल – हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
7. प्रेमचन्द साहित्य में व्यक्ति – डॉ. रक्षापुरी –आत्माराम एण्ड सन्स
8. भारतीय साहित्य के निर्माता प्रेमचन्द – प्रकाश चन्द्र गुप्त – साहित्य अकादमी

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.